SKPF-Wincompete Test Series 2026

टेस्ट 03 - राजस्थान कला एवं संस्कृति (भाग-1)

प्रश्नोत्तर एवं व्याख्या (Questions with Detailed Explanations)

उत्तर व्याख्या

प्रश्न 1:

सही उत्तर: A

व्याख्या: जून 2013 में कंबोडिया के नामपेन्ह में आयोजित यूनेस्को की बैठक में राजस्थान के 6 किलों—चित्तौड़गढ़, कुम्भलगढ़, रणथंभौर, गागरोन, आमेर और जैसलमेर—को विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया। गागरोन दुर्ग झालावाड़ में आहू और कालीसिंध नदियों के संगम पर स्थित है, जो इसे जल दुर्ग का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण बनाता है। मेहरानगढ़ (जोधपुर) और लोहागढ़ (भरतपुर) इस सूची में शामिल नहीं हैं।

जून 2013 में 6 किले शामिल हुए थे। मेहरानगढ़ और लोहागढ़ इस सूची में शामिल नहीं हैं।

प्रश्न 2:

सही उत्तर: B

व्याख्या: शुक्रनीति के अनुसार पारिख दुर्ग वह है जिसके चारों ओर गहरी खाई हो (जैसे लोहागढ़)। एरण दुर्ग वह है जिसका मार्ग पत्थर-कांटों से दुर्गम हो (जैसे रणथंभौर)। पारिघ दुर्ग वह है जिसके चारों ओर विशाल परकोटा हो (जैसे चित्तौड़गढ़)। वन दुर्ग वह है जो सघन वन से घिरा हो (जैसे सिवाना)। कथन 3 में पारिघ और वन दुर्ग की परिभाषा को मिश्रित किया गया है, अतः वह गलत है।

प्रश्न 3:

सही उत्तर: B

व्याख्या: कुम्भलगढ़ दुर्ग (राजसमंद) अरावली की ऊँची पहाड़ियों पर स्थित है। इसका सबसे ऊँचा महल 'कटारगढ़' है, जहाँ से महाराणा पूरे मेवाड़ पर दृष्टि रखते थे, इसीलिए इसे 'मेवाड़ की आँख' कहा जाता है। अबुल फजल ने इसकी इसी अत्यधिक ऊँचाई और बुलंदी को देखकर पगड़ी गिरने वाला प्रसिद्ध कथन कहा था।

दोनों तथ्य स्वतंत्र रूप से सही हैं, लेकिन दीवार की लंबाई पगड़ी गिरने की व्याख्या नहीं करती; व्याख्या दुर्ग के सबसे ऊँचे भाग 'कटारगढ़' की ऊँचाई है।

प्रश्न 4:

सही उत्तर: A

व्याख्या: चित्तौड़गढ़ दुर्ग मेसा के पठार पर स्थित है और क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान का सबसे बड़ा दुर्ग है। इसकी विशिष्टता यह है कि यहाँ दुर्ग के भीतर कृषि योग्य भूमि और जल स्रोत उपलब्ध थे, जिससे शत्रु द्वारा घेराबंदी किए जाने पर भी रसद के लिए दुर्ग आत्मनिर्भर रहता था। आज भी यहाँ आबादी निवास करती है। दुर्ग में जल प्रबंधन (बावड़ियाँ, कुंड) के उत्कृष्ट साक्ष्य मौजूद हैं।

निष्कर्ष 2 गलत है क्योंकि कीर्ति स्तंभ जैन तीर्थंकर आदिनाथ को समर्पित है। विष्णु को 'विजय स्तंभ' समर्पित है।

प्रश्न 5:

सही उत्तर: D

व्याख्या: चित्तौड़गढ़ दुर्ग में स्थित 'कीर्ति स्तंभ' 7 मंजिला जैन स्तंभ है जो प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ को समर्पित है, न कि भगवान विष्णु को। 'विजय स्तंभ' भगवान विष्णु को समर्पित है, जिसे 'विष्णु ध्वज' भी कहा जाता है। रणथंभौर की 32 खंभों की छतरी को हम्मीर देव द्वारा अपने पिता के न्यायपूर्ण शासन की स्मृति में बनवाए जाने के कारण 'न्याय की छतरी' कहते हैं।

प्रश्न 6:

सही उत्तर: D

व्याख्या: कुम्भलगढ़ दुर्ग अरावली की पहाड़ियों पर स्थित है, जबकि 'मेसा का पठार' वह स्थान है जहाँ चित्तौड़गढ़ दुर्ग स्थित है। 'मगरबी' पत्थर फेंकने का यंत्र था, 'पासीब' किले की दीवार तक पहुँचने के लिए निर्मित कृत्रिम चबूतरा था और 'बख्तरबंद' रणथंभौर दुर्ग की वह विशेषता है जिसके कारण वह पहाड़ियों के बीच छुपा रहता था।

प्रश्न 7:

सही उत्तर: A

wincompete

व्याख्या: मेहरानगढ़ दुर्ग (जोधपुर) का निर्माण राव जोधा ने 1459 में चिड़ियाटूँक पहाड़ी पर करवाया। इसके स्थापत्य में 'फूल महल' अपनी स्वर्ण नक्काशी के लिए और 'शृंगार चौकी' मारवाड़ के राजाओं के राजतिलक के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ की तोपें (किलकिला, शंभुबाण) भी सामरिक इतिहास का हिस्सा हैं।

मेहरानगढ़ यूनेस्को सूची में शामिल नहीं है।

प्रश्न 8:

सही उत्तर: A

व्याख्या: जैसलमेर का सोनारगढ़ दुर्ग धान्वन श्रेणी का है। इसकी निर्माण शैली 'इंटरलॉकिंग' आधारित है, जिसमें चूने का प्रयोग नहीं हुआ। इसकी छत लकड़ी की है जिसे सुरक्षित रखने के लिए गोमूत्र का लेप किया जाता था। 99 बुर्जों वाला यह दुर्ग रेगिस्तान में लंगर डाले जहाज जैसा दिखाई देता है।

'राजस्थान का खजुराहो' किराडू (बाड़मेर) को कहा जाता है, जैसलमेर को नहीं।

प्रश्न 9:

सही उत्तर: B

व्याख्या: लोहागढ़ दुर्ग (भरतपुर) का निर्माण महाराजा सूरजमल ने 1733 में करवाया था। यह एक पारिख दुर्ग है जिसके चारों ओर मिट्टी की दोहरी दीवारें हैं। तोप के गोले इन मिट्टी की दीवारों में धँस जाते थे, जिससे मुख्य प्राचीर को क्षति नहीं पहुँचती थी। इसी कारण लॉर्ड लेक जैसा अंग्रेज सेनापति भी इसे जीत नहीं सका। अष्टधातु दरवाजा महाराजा जवाहर सिंह दिल्ली से लेकर आए थे, रणथंभौर से नहीं। दोनों तथ्य सही हैं पर व्याख्या गलत है।

प्रश्न 10:

सही उत्तर: B

व्याख्या: सोनारगढ़ (जैसलमेर) के 99 बुर्ज केवल सौंदर्य के लिए नहीं थे, बल्कि वे सुरक्षा की दृष्टि से बनाए गए थे। इन बुर्जों की कोणीय स्थिति सैनिकों को शत्रु सेना पर कई दिशाओं से प्रहार करने की सुविधा देती थी, जिससे शत्रु का सीधा आक्रमण विफल हो जाता था। अतः निष्कर्ष 2 सामरिक विज्ञान पर आधारित होने के कारण सही है।

प्रश्न 11:

सही उत्तर: B

व्याख्या: 'सूरज प्रोल' बीकानेर के **जूनागढ़ दुर्ग** का मुख्य प्रवेश द्वार है, जिसके बाहर जयमल और फत्ता की गजारूढ़ मूर्तियाँ स्थित हैं। इस द्वार का निर्माण महाराजा रायसिंह के काल में हुआ था। द्वार के दोनों ओर 1567-68 ई. के चित्तौड़गढ़ युद्ध के अमर शहीद नायक **जयमल और फत्ता** की हाथी पर सवार पाषाण मूर्तियाँ स्थित हैं। मूल रूप से ऐसी मूर्तियाँ मुगल सम्राट अकबर ने आगरा के किले के बाहर लगवाई थीं, जिन्हें बाद में औरंगजेब ने नष्ट करवा दिया था। रायसिंह ने उनकी वीरता से प्रभावित होकर यहाँ इनकी स्थापना करवाई।मेहरानगढ़ दुर्ग के प्रमुख द्वारों में जय पोल, लोहा पोल और फतेह पोल शामिल हैं। अक्षय प्रोल जैसलमेर का, लोहा प्रोल लोहागढ़ का और पाडन पोल चित्तौड़गढ़ का प्रथम द्वार है।

प्रश्न 12:

सही उत्तर: C

व्याख्या: 'रहट पद्धति' (लिफ्ट प्रणाली) का उपयोग ऊँचे भागों तक जल पहुँचाने के लिए **कुम्भलगढ़ दुर्ग** में किया जाता था, न कि जैसलमेर में। मेहरानगढ़ के रानीसर-पद्मसर तालाब, लोहागढ़ की सुजान गंगा नहर और जयगढ़ के विशाल टांके राजस्थान के दुर्ग स्थापत्य में जल प्रबंधन के प्रामाणिक और उन्नत उदाहरण हैं।

प्रश्न 13:

सही उत्तर: A

व्याख्या: नागर शैली उत्तर भारतीय मंदिरों की आधारभूत शैली है। गुर्जर-प्रतिहारों के काल में विकसित महा-मारू शैली (ओसियाँ) और नागर की उप-शैली भूमिज (सेवाड़ी, बिजोलिया) राजस्थान के मंदिर स्थापत्य के विकास के महत्वपूर्ण चरण हैं। सोमेश्वर मंदिर 'मारू-गुर्जर' शैली का उदाहरण है, भूमिज का नहीं।

प्रश्न 14:

सही उत्तर: A

व्याख्या: देलवाड़ा के विमल वसही और लूण वसही मंदिर जैन स्थापत्य के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। कथन 3 गलत है क्योंकि **पित्तलहर मंदिर** भगवान **ऋषभदेव (आदिनाथ)** को समर्पित है, जिसमें उनकी 108 मन भारी पीतल की मूर्ति है, न कि भगवान महावीर की। महावीर स्वामी का यहाँ एक पृथक मंदिर स्थित है।

पित्तलहर मंदिर ऋषभदेव को समर्पित है, महावीर स्वामी को नहीं।

प्रश्न 15:

सही उत्तर: B

व्याख्या: किराडू (बाड़मेर) के मंदिर अपनी बारीक नक्काशी और कामुक मूर्तिकला के कारण खजुराहो के समान माने जाते हैं। सोमेश्वर मंदिर यहाँ का सबसे भव्य मंदिर है। यह मारू-गुर्जर (सोलंकी) शैली का प्रतिनिधित्व करता है, जो स्थापत्य के अलंकरण के लिए प्रसिद्ध है।

प्रश्न 16:

wincomrate

सही उत्तर: A

व्याख्या: 10वीं शताब्दी के बाद विकसित मारू-गुर्जर शैली में अलंकरण इतना सघन हो गया था कि स्तंभों और छतों पर की गई बारीक नक्काशी के कारण पत्थर का मूल स्वरूप छिप जाता था। इसे कला इतिहास में 'अति-अलंकरण' कहा जाता है। निष्कर्ष 2 गलत है क्योंकि यह परिवर्तन धार्मिक और कलात्मक उद्देश्यों के लिए था, न कि सैन्य सुरक्षा के लिए।

प्रश्न 17:

सही उत्तर: D

व्याख्या: नागदा (उदयपुर) का सास-बहू मंदिर वास्तव में **भगवान विष्णु** (सहस्त्रबाहु) को समर्पित है, न कि भगवान शिव को। रणकपुर के 1444 खंभे, ओसियाँ का सूर्य मंदिर (राजस्थान का कोणार्क) और जगदीश मंदिर (सपनों में बना मंदिर) के तथ्य आधिकारिक रूप से सही हैं।

प्रश्न 18:

सही उत्तर: C

व्याख्या: किराडू का सोमेश्वर मंदिर **मारू-गुर्जर (सोलंकी) शैली** का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है, न कि भूमिज शैली का। भूमिज शैली के उदाहरणों में सेवाड़ी का जैन मंदिर और बिजोलिया का उण्डेश्वर मंदिर शामिल हैं। ओसियाँ के मंदिर महा-मारू और पंचायतन शैली का प्रतिनिधित्व करते हैं।

प्रश्न 19:

सही उत्तर: A

व्याख्या: हवा महल (जयपुर) बिना नींव के खड़ा एक अद्भुत वैज्ञानिक स्थापत्य है। इसकी पाँच मंजिलों के नाम (शरद, रतन, विचित्र, प्रकाश, हवा) और 953 झरोखे सवाई प्रताप सिंह के काल की कलात्मकता को दर्शाते हैं। इसमें वेंचुरी प्रभाव का उपयोग प्राकृतिक शीतलन हेतु किया गया है। हवा महल में 953 झरोखे और 365 खिड़कियाँ हैं, 1444 खिड़कियाँ नहीं (1444 खंभे रणकपुर में हैं)।

प्रश्न 20:

सही उत्तर: A

व्याख्या: सवाई जयसिंह द्वारा निर्मित चन्द्र महल **7 मंजिला** है, न कि 5 मंजिला। उदयपुर सिटी पैलेस को फर्ग्यूसन ने विंडसर महलों के समान बताया और प्रीतम निवास चौक के चार द्वार (मोर, कमल, गुलाब, लहरिया) जयपुर सिटी पैलेस की विशेषता हैं। अतः कथन 1 और 2 सही हैं।

चन्द्र महल 7 मंजिला है, न कि 5 मंजिला।

प्रश्न 21:

सही उत्तर: C

व्याख्या: राजस्थान के महलों में 18वीं सदी के उत्तरार्ध में मुगल और राजपूत शैलियों का जो मिश्रण हुआ, उसे इण्डो-सारसेनिक शैली कहा गया। हवा महल और मुबारक महल (जयपुर) इसके सर्वोत्तम उदाहरण हैं जहाँ मुगल मेहराबों को राजपूत झरोखों के साथ कुशलता से जोड़ा गया है।

1818 की संधियाँ अंग्रेजों और राजपूतों के मध्य हुई थीं, मुगलों के साथ नहीं।

प्रश्न 22:

सही उत्तर: A

व्याख्या: डीग (भरतपुर) के जल महल फव्वारों और उद्यानों के लिए प्रसिद्ध हैं। यहाँ की जल प्रणाली इतनी उन्नत थी कि पत्थरों को टकराकर कृत्रिम वर्षा का आभास कराया जाता था। निष्कर्ष 2 गलत है. डीग महलों का निर्माण मुख्य रूप से महाराजा बदन सिंह और सूरजमल द्वारा करवाया गया था।

प्रश्न 23:

सही उत्तर: D

व्याख्या: महाराजा ईश्वरी सिंह की छतरी गेटोर की छतरियों के मध्य स्थित नहीं है। **ईश्वरी सिंह** जयपुर के एकमात्र ऐसे राजा हैं जिनकी छतरी **सिटी पैलेस के पास (जय निवास उद्यान)** में स्थित है, जबकि शेष कछवाहा शासकों की छतरियाँ गेटोर में हैं। मूसी महारानी की छतरी 80 खंभों की है।

प्रश्न 24:

सही उत्तर: D

व्याख्या: 'बादल महल' कुम्भलगढ़ दुर्ग के सबसे **ऊँचे भाग (कटारगढ़)** में स्थित है, जहाँ महाराणा प्रताप का जन्म हुआ था। उम्मेद भवन को छीतर पैलेस कहते हैं, मुबारक महल तीन शैलियों का संगम है और जग मंदिर पिछोला झील के मध्य स्थित है।

प्रश्न 25:

सही उत्तर: C

व्याख्या: चाँद बावड़ी (आभानेरी) अपनी गहराई और ज्यामितीय सीढ़ियों के लिए विश्व प्रसिद्ध है। रानीजी की बावड़ी बूंदी में स्थापत्य का शिखर है। राजसमंद झील के नौ चौकी पाल पर 25 शिलालेखों वाली 'राजप्रशस्ति' संसार का सबसे बड़ा शिलालेख है। तीनों कथन आधिकारिक साक्ष्यों पर आधारित और सत्य हैं।

winccomnote

प्रश्न 26:

सही उत्तर: B

व्याख्या: राजस्थानी चित्रकला का स्वर्ण काल 15वीं शताब्दी के प्रारंभिक काल को माना जाता है,कथन गलत है।

प्रश्न 27:

सही उत्तर: C

व्याख्या: नसीरुद्दीन ने 'रागमाला' का चित्रण चावण्ड में किया था। साहिबदीन मेवाड़ के जगत सिंह प्रथम के काल के प्रमुख चित्रकार थे जिन्होंने उदयपुर में रागमाला चित्रित की।

प्रश्न 28:

सही उत्तर: A

व्याख्या:निष्कर्ष 1 (सत्य): मेवाड़ शैली राजस्थान की 'मूल शैली' मानी जाती है। इसमें प्रकृति चित्रण के अंतर्गत कदम्ब के वृक्ष और पशु पक्षियों में हाथियों व चकोर पक्षी का अंकन बहुतायत से मिलता है। धार्मिक विषयों (कृष्ण लीला, रामायण) में इन प्रतीकों का प्रयोग विशिष्टता के साथ हुआ है।

निष्कर्ष 2 (असत्य): मेवाड़ शैली की मुख्य रंग योजना में लाल और पीला (चटक रंग) प्रधान हैं। नीला और सुनहरा रंग मुख्य रूप से बूंदी और कोटा (हाड़ौती) या मुगल प्रभावित जयपुर शैली की विशेषता है। मेवाड़ शैली अपनी प्रारंभिक अवस्था में मुगल प्रभाव से मुक्त रही, इसलिए इसे शुद्ध भारतीय/राजस्थानी शैली कहा जाता है।

प्रश्न 29:

सही उत्तर: C

व्याख्या: 'सुपासनाह चरियं' (1423 ई.) का चित्रण हीरालाल द्वारा महाराणा मोकल के समय किया गया था, न कि नसीरुद्दीन द्वारा।

प्रश्न 30:

सही उत्तर: C

व्याख्या: कथन 1 (सत्य): नाथद्वारा शैली पूर्णतः **वल्लभ संप्रदाय (पुष्टि मार्ग)** से प्रभावित है। यहाँ श्रीनाथजी (कृष्ण) के स्वरूप की प्रधानता है, जिसके कारण इसे 'कृष्ण भक्ति' की प्रधान शैली माना जाता है।

कथन 2 (सत्य): 'पिछवाई' (मूर्ति के पीछे पर्दे पर किया गया चित्रण) यहाँ की विश्व प्रसिद्ध विशेषता है। इसमें प्रकृति चित्रण के अंतर्गत **केले के वृक्ष** और पशु चित्रण में **गायों** का अंकन अनिवार्य रूप से और अत्यधिक सुंदरता के साथ किया गया है।

कथन 3 (असत्य): साहिबा और उष्णा अजमेर शैली की प्रसिद्ध महिला चित्रकार रही हैं। नाथद्वारा शैली की प्रसिद्ध महिला चित्रकारों के नाम **'कमला' और 'इलायची'** हैं।

प्रश्न 31:

सही उत्तर: A

व्याख्या: कथन (A) (सत्य): जोधपुर (मारवाड़) शैली का चरमोत्कर्ष या **'स्वर्ण युग'** महाराजा **मानसिंह (1803-1843 ई.)** के काल को माना जाता है। यद्यपि इस शैली की शुरुआत राव मालदेव के समय हुई थी, लेकिन मानसिंह के समय इसे एक विशिष्ट पहचान मिली।

कारण (R) (सत्य): महाराजा मानसिंह 'नाथ संप्रदाय' के परम अनुयायी थे। उनके समय में **'नाथ चरित्र'**, **'शिव पुराण'** और **'दुर्गा चरित्र'** जैसे ग्रंथों पर आधारित सैकड़ों चित्र बने। साथ ही, मारवाड़ की लोक संस्कृति के प्रतीक **'ढोला-मारू'**, 'मूमल-महेन्द्र' और 'रूपमती-बाज बहादुर' जैसे प्रेम-आख्यानों का चित्रण इस काल की प्रधान विशेषता रही। नाथ मत के प्रभाव के कारण ही चित्रों में एक विशेष आध्यात्मिक और दार्शनिक गंभीरता दिखाई देती है।

प्रश्न 32:

सही उत्तर: A

व्याख्या: निष्कर्ष 1 (सत्य): बीकानेर शैली की सबसे विशिष्ट और अनूठी तकनीकी परंपरा यह है कि यहाँ के चित्रकार (विशेषकर उस्ता और मथेरणा परिवार) अपने चित्रों के अंत में अपना **नाम (हस्ताक्षर) और तिथि (संवत)** अंकित करते थे। राजस्थान की अन्य किसी भी शैली में यह परंपरा इतनी व्यापक रूप से नहीं पाई जाती।

निष्कर्ष 2 (असत्य): 'मथेरणा कला' एक स्थानीय जैन कला है, जो केवल मुगल दृश्यों तक सीमित नहीं थी। इस कला के अंतर्गत **गीत-गोविंद, भागवत पुराण, और कृष्ण लीला** जैसे धार्मिक विषयों के साथ-साथ भित्ति चित्रण (आला-गीला पद्धति) का कार्य प्रमुखता से किया गया। यह लोक कला और शास्त्रीय कला का अनूठा मिश्रण है।

प्रश्न 33:

सही उत्तर: D

व्याख्या: मेवाड़ शैली राजस्थान की प्राचीनतम और मौलिक शैली है, इसीलिए इसे 'जननी' शैली कहा जाता है। मुगलों के साथ संधियाँ और राजनीतिक दबाव होने के बावजूद, मेवाड़ के चित्रकारों ने अपनी 'स्वदेशी' पहचान (लाल-पीले रंग, सुगठित शरीर, बादामी आँखें) को 17वीं सदी तक सुरक्षित रखा। साहिबदीन और मनोहर जैसे चित्रकारों ने इसे दरबारी भव्यता के साथ भक्ति से जोड़ा।

wincomplete

उदयपुर (मेवाड़) शैली के प्रधान रंग लाल और पीले हैं और प्रधान वृक्ष कदम्ब है। नीला और सफेद संयोजन ढूँढाड़ या किशनगढ़ में अधिक प्रभावी है।

प्रश्न 34:

सही उत्तर: B

व्याख्या: कथन 1 (सत्य): किशनगढ़ शैली का **'स्वर्ण युग'** राजा **सावंत सिंह** (जो बाद में 'नागरीदास' के नाम से प्रसिद्ध हुए) का शासनकाल (1748-1764 ई.) माना जाता है। इनके समय में यह शैली अपनी मौलिकता और श्रृंगारिकता के शिखर पर पहुँची।

कथन 2 (सत्य): सुप्रसिद्ध कला समीक्षक **एरिक डिकिंसन** और **डॉ. फैयाज अली** ने इस शैली को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति दिलाई। डिकिंसन ने ही निहालचंद द्वारा निर्मित 'बणी-ठणी' के चित्र की तुलना प्रसिद्ध इतालवी पेंटिंग से करते हुए इसे **'भारत की मोनालिसा'** कहा था।

कथन 3 (सत्य): किशनगढ़ शैली में नारी सौंदर्य का अद्भुत अंकन मिलता है। यहाँ नायिका के नेत्रों को **'खंजन पक्षी'** या 'कमान' के समान कटावदार और लम्बा चित्रित किया गया है। इसके अलावा लंबी सुराहीदार गर्दन और नुकीली नाक इस शैली की प्रमुख शारीरिक विशेषताएँ हैं।

प्रश्न 35:

सही उत्तर: C

व्याख्या: कथन (A) (सत्य): किशनगढ़ शैली में नारी के जिस लावण्य और सौंदर्य का अंकन किया गया है (जैसे लंबी और सुराहीदार गर्दन, धनुषाकार भौहें, कजरारे नेत्र और पारदर्शी ओढ़नी), वह राजस्थानी चित्रकला के **सौंदर्यशास्त्र का सर्वोच्च शिखर** माना जाता है। निहालचंद द्वारा निर्मित 'बणी-ठणी' इसका उत्कृष्ट उदाहरण है।

कारण (R) (असत्य): यह कहना पूरी तरह गलत है कि चित्रकारों ने धार्मिक विषयों को त्याग दिया था। वास्तव में, किशनगढ़ शैली का मूल आधार ही **राधा-कृष्ण की भक्ति** और **वल्लभ संप्रदाय** था। राजा सावंत सिंह (नागरीदास) स्वयं कृष्ण भक्त थे। यहाँ के चित्रों में दरबारी वैभव के साथ-साथ 'चांदनी रात की संगोष्ठी', 'राधा-कृष्ण की लीलाएं' और 'भागवत पुराण' जैसे धार्मिक विषयों का प्रधानता से चित्रण हुआ है।

प्रश्न 36:

सही उत्तर: C

व्याख्या: निष्कर्ष 1 (सत्य): बूंदी शैली को **'पशु-पक्षियों की चित्रशैली'** इसीलिए कहा जाता है क्योंकि इसमें प्रकृति का अत्यंत सजीव चित्रण हुआ है। इस शैली में हरे-भरे सघन वन, खजूर के वृक्ष, सरोवरों में कमल के फूल और विशेष रूप से **'वर्षा में नाचते हुए मोर'** का अंकन इसे विश्व स्तर पर अद्वितीय बनाता है।

निष्कर्ष 2 (सत्य): बूंदी के तारागढ़ दुर्ग में स्थित **'चित्रशाला'** (महारवा उम्मेद सिंह के काल में निर्मित) अपने बेहतरीन भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध है। इसकी भव्यता और बारीकी के कारण ही इतिहासकारों ने इसे **'भित्ति चित्रों का स्वर्ग'** (Heaven of Frescoes) की उपधि दी है।

प्रश्न 37:

सही उत्तर: C

व्याख्या: कोटा शैली की अनूठी विशेषता यह है कि इसमें रानियों और दरबारी महिलाओं को भी सघन वनों में शिकार करते हुए दिखाया गया है।

प्रश्न 38:

सही उत्तर: B

व्याख्या: जयपुर शैली पर मुगल प्रभाव सबसे अधिक रहा है क्योंकि आमेर/जयपुर के शासकों का मुगलों के साथ निकटतम संबंध था।

प्रश्न 39:

सही उत्तर: A

व्याख्या: कथन (A) (सत्य): अलवर शैली राजस्थानी चित्रकला की एकमात्र ऐसी शैली है जहाँ **गणिकाओं (वेश्याओं) के चित्र** प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। इसके अतिरिक्त, इस शैली में कामशास्त्र के आधार पर 'कोकशास्त्र' के चित्रों का भी निर्माण हुआ है। यह विशेषता इसे अन्य शैलियों से पूरी तरह अलग बनाती है।

कारण (R) (सत्य): अलवर रियासत की भौगोलिक स्थिति दिल्ली और जयपुर के निकट थी। इस कारण यहाँ की चित्रकला पर **मुगल दरबार** की विलासिता, **जयपुर शैली** की सुकोमलता और तत्कालीन **ब्रिटिश (अंग्रेजी)** प्रभाव का अनूठा सम्मिश्रण दिखाई देता है। दरबारी संस्कृति और पाश्चात्य/मुगल प्रभाव के कारण ही यहाँ गणिकाओं और व्यक्ति चित्रों (Portraits) को अधिक महत्व मिला।

प्रश्न 40:

सही उत्तर: B

व्याख्या: निष्कर्ष 1 (सत्य): शेखावाटी की हवेलियाँ (जैसे नवलगढ़, झुंझुनू, फतेहपुर) अपने भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध हैं, जिसके कारण इस क्षेत्र को **'Open Art Gallery'** कहा जाता है। यहाँ के कलाकारों ने अपनी कल्पनाशीलता से पारंपरिक विषयों (कृष्ण लीला, लोकगाथाएँ) के साथ-साथ तत्कालीन आधुनिक आविष्कारों जैसे **रेलगाड़ी, हवाई जहाज, मोटर कार और ग्रामोफोन** को भी दीवारों पर उकेरा।

wincompete

निष्कर्ष 2 (सत्य, लेकिन तकनीकी सुधार के साथ): 'आरायश' पद्धति, जिसे **'फ्रेस्को-बुनो'** (Fresco-Buono) या 'आला-गीला' पद्धति भी कहते हैं, में **गीली दीवार** (प्लास्टर के गीले होने पर) पर ही चित्रण किया जाता है ताकि रंग दीवार की गहराई तक समा जाएँ। (निष्कर्ष 2 में गीली दीवार का ही उल्लेख है, अतः वह सत्य है। यदि 'सूखी दीवार' लिखा होता तो वह 'फ्रेस्को-सेको' कहलाता)।

प्रश्न 41:

सही उत्तर: D/C

व्याख्या: लालचंद जानवरों की लड़ाई के दृश्यों (हाथियों की लड़ाई आदि) के चित्रण के लिए प्रसिद्ध थे, न कि शांत दृश्यों के लिए।

प्रश्न 42:

सही उत्तर: D

व्याख्या: विकल्प (D) असत्य (असंगत) है: उदयपुर (मेवाड़) शैली की मुख्य विशेषता **चटक रंगों (लाल और पीले)** का प्रयोग और आकृतियों की सुस्पष्टता है। **छाया-प्रकाश (Shading)** का अत्यधिक प्रयोग और यथार्थवाद **बुंदी शैली** और बाद की **जयपुर शैली** (मुगल प्रभाव के कारण) की विशेषता रही है, न कि विशुद्ध उदयपुर शैली की।

प्रश्न 43:

सही उत्तर: B

व्याख्या: कथन (A) (सत्य): जैसलमेर शैली राजस्थानी चित्रकला की सबसे **'विशुद्ध'** शैली मानी जाती है। अपनी भौगोलिक स्थिति और मरुस्थलीय एकांतता के कारण इस शैली पर **मुगल, जोधपुर या अन्य किसी भी बाहरी शैली का प्रभाव नहीं पड़ा।** यह प्रश्न आरपीएससी (RPSC) परीक्षाओं में बार-बार पूछा जाता है कि "वह कौन सी शैली है जो पूर्णतः स्थानीय और मौलिक है?"

कारण (R) (सत्य): लोद्रवा (जैसलमेर) की राजकुमारी **'मूमल'** का चित्र इस शैली की मुख्य विषय-वस्तु है। 'मूमल-महेन्द्र' की प्रेम कथा यहाँ के लोक-जीवन और कला का आधार रही है। यद्यपि यह कारण सत्य है, लेकिन यह कथन (A) की व्याख्या नहीं करता। कथन (A) का सही कारण जैसलमेर की **दुर्गम भौगोलिक स्थिति** और शासकों का कला के प्रति संरक्षण है, न कि केवल मूमल का चित्रण।

दोनों कथन सत्य हैं लेकिन कारण कथन की व्याख्या नहीं करता।

प्रश्न 44:

सही उत्तर: C

व्याख्या: निष्कर्ष 1 (सत्य): देवगढ़ (राजसमंद) मेवाड़ के 16वें उमराव (ठिकाना) की राजधानी थी। अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण यहाँ की चित्रकला शैली में **मेवाड़** की मौलिकता के साथ-साथ **मारवाड़** (जोधपुर) और **ढूँढाड़** (जयपुर) शैलियों का अनूठा मिश्रण दिखाई देता है। इसे राजस्थानी चित्रकला का **'त्रिवेणी संगम'** भी कहा जा सकता है।

निष्कर्ष 2 (सत्य): देवगढ़ शैली को दुनिया के सामने लाने और एक पृथक शैली के रूप में स्थापित करने का श्रेय सुप्रसिद्ध कला समीक्षक **डॉ. श्रीधर अंधारे** को जाता है। उन्होंने ही इस शैली की बारीकियों को रेखांकित किया था।

प्रश्न 45:

सही उत्तर: A

व्याख्या: विकल्प (A) असत्य (असंगत) है: उनियारा शैली मेवाड़ स्कूल का नहीं, बल्कि **ढूँढाड़ स्कूल** का हिस्सा है। उनियारा (टोंक) नरूका वंश के शासकों का ठिकाना था। इस शैली पर जयपुर (ढूँढाड़) और बूंदी (हाड़ौती) शैलियों का मिला-जुला प्रभाव देखने को मिलता है। इसके प्रमुख चित्रकार **धीमा, मीरबख्श और रामलखन** थे।

विकल्प (B) सत्य है: शेखावाटी शैली ढूँढाड़ स्कूल के अंतर्गत आती है। यह अपनी हवेलियों और भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध है।

विकल्प (C) सत्य है: चावण्ड शैली मेवाड़ स्कूल की सबसे प्रारंभिक और महत्वपूर्ण उप-शैली है। महाराणा प्रताप के समय इसका विकास हुआ और अमरसिंह प्रथम के काल में प्रसिद्ध **'रागमाला' (1605 ई.)** का चित्रण नसीरुद्दीन द्वारा यहीं किया गया था।

विकल्प (D) सत्य है: नागौर शैली मारवाड़ स्कूल की उप-शैली है। इसकी विशेषता 'बुझे हुए रंगों' का प्रयोग और पारदर्शी वेशभूषा है।

प्रश्न 46:

सही उत्तर: C

व्याख्या: गोवर्धन लाल जोशी 'बाबा' ने भील जीवन, गवरी नृत्य और ग्रामीण संस्कृति का सजीव चित्रण किया है, न कि केवल दरबारी संस्कृति का।

प्रश्न 47:

सही उत्तर: A

व्याख्या: कथन (A) (सत्य): सौभाग्यमल गहलोत को राजस्थानी चित्रकला में **'नीड़ का चितेरा'** (Painter of Nests) कहा जाता है। उन्होंने पक्षियों के घोंसलों (नीड़) का वर्षों तक सूक्ष्म अध्ययन किया और उन्हें कैनवास पर अत्यंत सजीवता के

wincompete

साथ उतारा। उनकी कलाकृतियाँ पक्षी जीवन की जटिलताओं और उनके प्राकृतिक आवास को दर्शाती हैं।

कारण (R) (सत्य): पारंपरिक राजस्थानी शैलियों (जैसे मेवाड़, मारवाड़) के बाद आधुनिक काल में राजस्थानी चित्रकारों ने **यथार्थवाद (Realism)** की ओर रुख किया। इस प्रवृत्ति के तहत कलाकारों ने किसी विशेष विषय (जैसे पक्षी, गांव का जीवन, या निर्धनता) को चुनकर उसका यथार्थवादी चित्रण शुरू किया। सौभाग्यमल गहलोत द्वारा घोंसलों का सूक्ष्म और सजीव चित्रण इसी 'यथार्थवादी प्रवृत्ति' का एक हिस्सा है।

प्रश्न 48:

सही उत्तर: C

व्याख्या: निष्कर्ष 1 (सत्य): उनियारा (वर्तमान टोंक जिला) जयपुर रियासत का एक प्रमुख ठिकाना था। इसकी भौगोलिक स्थिति जयपुर और बूंदी के मध्य होने के कारण यहाँ की चित्रकला में **जयपुर (ढूँढाड़ स्कूल)** की कोमलता और **बूंदी (हाड़ौती स्कूल)** के रंगों व प्रकृति चित्रण का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। इसे ढूँढाड़ स्कूल की एक महत्वपूर्ण उप-शैली माना जाता है।

निष्कर्ष 2 (सत्य): उनियारा शैली को समृद्ध करने में स्थानीय चित्रकारों का बड़ा योगदान रहा है। **धीमा, मीरबख्श, काशी और रामलखन** इस शैली के शीर्षस्थ कलाकार थे। विशेष रूप से मीरबख्श द्वारा चित्रित 'राम-दरबार' और 'हनुमान' के चित्र इस शैली की उत्कृष्ट कृतियाँ मानी जाती हैं।

प्रश्न 49:

सही उत्तर: C

व्याख्या: विकल्प (A) सत्य है: भूरसिंह शेखावत को **'गाँवों का चितेरा'** कहा जाता है। उन्होंने ग्रामीण परिवेश, साधारण जनजीवन और भारतीय देशभक्तों व क्रांतिकारियों के सजीव चित्र बनाए। उनकी कला में मिट्टी की सौंधी महक और यथार्थवाद झलकता है।

विकल्प (B) सत्य है: जगमोहन माथोड़िया को **'श्वानों (कुत्तों) का चितेरा'** माना जाता है। उन्होंने श्वानों की विभिन्न नस्लों और उनकी भाव-भंगिमाओं का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसनीय चित्रण किया है।

विकल्प (C) असत्य (असंगत) है: रामगोपाल विजयवर्गीय राजस्थान के अत्यंत प्रभावशाली चित्रकार रहे हैं। उन्होंने 'केवल स्थिर निर्जीव वस्तुओं' का चित्रण नहीं किया, बल्कि वे अपनी **'मेघदूत'** और **'अभिज्ञान शाकुंतलम'** जैसी काव्य-कृतियों पर आधारित **काव्यात्मक और रूमानी चित्रकारी** के लिए प्रसिद्ध हैं। उन्होंने बंगाल शैली और राजस्थानी शैली का अनूठा मिश्रण किया।

विकल्प (D) सत्य है: देवकी नंदन शर्मा को **'पशु-पक्षियों का चितेरा'** कहा जाता है। विशेष रूप से **'मोर'** का जितना सुंदर और विविधतापूर्ण चित्रण उन्होंने किया है, वह अद्वितीय है। उन्हें 'मास्टर ऑफ लिविंग ऑब्जेक्ट्स' भी कहा जाता है।

रामगोपाल विजयवर्गीय अपनी काल्पनिक और काव्यात्मक शैली (मेघदूत, रसिकप्रिया) के लिए प्रसिद्ध थे, उन्हें निर्जीव वस्तुओं तक सीमित करना गलत है।

प्रश्न 50:

सही उत्तर: A

व्याख्या: कथन 1 (सत्य): 'तस्वीरों रो कारखानो', जिसे **'चितेरों की ओवरी'** भी कहा जाता है, की स्थापना मेवाड़ के महाराणा **जगतसिंह प्रथम** (मेवाड़ शैली का स्वर्ण काल) ने उदयपुर के राजमहलों में की थी। इसका उद्देश्य चित्रकारों को राजकीय संरक्षण प्रदान करना और चित्रकला को बढ़ावा देना था।

कथन 2 (सत्य): 'सूरतखाना' जयपुर रियासत का चित्रकला विभाग था। सवाई जयसिंह ने जयपुर में 36 कारखानों की स्थापना की थी, जिनमें से एक 'सूरतखाना' था जहाँ चित्रकार चित्रों का निर्माण और लघु चित्रों का संग्रह करते थे। **सवाई प्रताप सिंह** के समय यह विभाग अपने चरमोत्कर्ष पर था।

कथन 3 (असत्य): 'पोथीखाना' बीकानेर शैली से नहीं, बल्कि **जयपुर शैली** से संबंधित है। यह जयपुर के महाराजाओं का निजी पुस्तकालय और चित्रशाला थी। बीकानेर शैली के संदर्भ में **'अनूप संस्कृत लाइब्रेरी'** और जैन भंडारों के चित्र संग्रह प्रसिद्ध हैं।

पोथीखाना जयपुर में स्थित है; बीकानेर में अनूप संस्कृत पुस्तकालय चित्रकला का केंद्र रहा है।

प्रश्न 51:

सही उत्तर: C

व्याख्या: कथन (A) (सत्य): जयपुर की **मीनाकारी (Meenakari)** को राजस्थानी हस्तशिल्प की 'आत्मा' और 'गहनों का श्रृंगार' माना जाता है। सोने और चाँदी के आभूषणों पर रंगों की जड़ाई की यह कला जयपुर को विश्वभर में विशिष्ट पहचान दिलाती है। जयपुर को मीनाकारी का सबसे बड़ा केंद्र माना जाता है।

कारण (R) (असत्य): मीनाकारी मूलतः **फारस (ईरान)** की कला है, यह तथ्य सही है। लेकिन, इसे सवाई जयसिंह सीधे तेहरान से जयपुर नहीं लाए थे। वास्तव में, इस कला को आमेर के राजा **मानसिंह प्रथम** (16वीं शताब्दी के अंत में) **लाहौर** से जयपुर (आमेर) लेकर आए थे। सवाई जयसिंह ने बाद में इस कला को और अधिक प्रोत्साहित किया, लेकिन लाने का श्रेय मानसिंह प्रथम को जाता है।

मीनाकारी को महाराजा मानसिंह प्रथम **लाहौर** से जयपुर लेकर आए थे, सवाई जयसिंह तेहरान से नहीं।

प्रश्न 52:

सही उत्तर: C

व्याख्या: कथन 1 (सत्य): ब्लू पॉटरी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें **सामान्य चिकनी मिट्टी (Clay) का प्रयोग बिल्कुल नहीं होता**। इसका आधार (Dough) क्वार्ट्ज पाउडर, कांच, मुल्तानी मिट्टी, साज्जी खार और गोंद के मिश्रण से तैयार किया जाता है। यह तकनीक इसे अन्य मिट्टी के बर्तनों से अलग बनाती है।

कथन 2 (सत्य): यह कला मूलतः **फारस (Persia/Iran)** की है। मुगल काल में यह भारत आई। जयपुर के संदर्भ में, **महाराजा मानसिंह प्रथम** इस कला को फारस से लाहौर लाए थे, जहाँ से यह आमेर (जयपुर) पहुँची। हालांकि, इसका सर्वाधिक विकास महाराजा रामसिंह द्वितीय के काल में हुआ।

कथन 3 (असत्य): पद्मश्री **कृपाल सिंह शेखावत** को ब्लू पॉटरी का जादूगर कहा जाता है। पारंपरिक रूप से इसमें केवल नीले और हरे रंग का प्रयोग होता था, लेकिन शेखावत ने **25 नए रंगों** का प्रयोग कर एक नई शैली विकसित की, जिसे **'कृपाल शैली'** के नाम से जाना जाता है।

प्रश्न 53:

सही उत्तर: C

व्याख्या: ब्लू पॉटरी - जयपुर (संगत): यह राजस्थान की सबसे प्रसिद्ध पॉटरी है, जो अपनी नीली आभा और बिना मिट्टी के प्रयोग वाली तकनीक के लिए जानी जाती है।

ब्लैक पॉटरी - कोटा (संगत): कोटा की ब्लैक पॉटरी अपने काले रंग और किफ़ायती दाम के लिए प्रसिद्ध है। इसका उपयोग मुख्य रूप से घरेलू सजावट के सामानों में होता है।

कागजी (Double Cut) पॉटरी - अलवर (असंगत का सही तथ्य): कागजी पॉटरी का मुख्य केंद्र **अलवर** है, न कि बीकानेर। इसमें बर्तन इतने पतले बनाए जाते हैं कि वे कागज के समान हल्के होते हैं, इसीलिए इसे 'कागजी' कहा जाता है। इसे 'डबल कट' पॉटरी भी कहते हैं क्योंकि इसमें बारीक नक्काशी और छेद (Cuts) किए जाते हैं।

सुनहरी (Golden) पॉटरी - बीकानेर (संगत): बीकानेर की सुनहरी टेराकोटा पॉटरी प्रसिद्ध है, जिस पर सोने के रंगों से चित्रकारी की जाती है।

कागजी पॉटरी के लिए **अलवर** प्रसिद्ध है, बीकानेर नहीं। बीकानेर अपनी सुनहरी पॉटरी हेतु जाना जाता है।

प्रश्न 54:

सही उत्तर: A

व्याख्या: कथन 1 (सत्य): थेवा कला में **रंगीन बेल्जियम कांच** (मुख्यतः हरे रंग का, लेकिन अब अन्य रंगों का भी) का प्रयोग होता है। इस कांच पर सोने (23-24 कैरेट) की अत्यंत बारीक और सुंदर नक्काशी (जाल बुनाई) की जाती है। यह कांच और सोने के जुगलबंदी की एक अनूठी हस्तकला है।

कथन 2 (सत्य): इस कला के प्रवर्तक **नाथूजी सोनी** माने जाते हैं। लगभग 400 वर्ष पुरानी यह कला आज भी प्रतापगढ़ के केवल एक ही परिवार (राजसोनी परिवार) तक सीमित है। इस परिवार ने सदियों से इस कला की बारीकियों को गुप्त रखा है और इसे केवल अपने बेटों को ही सिखाया जाता है।

कथन 3 (असत्य): थेवा कला की सबसे महत्वपूर्ण प्रक्रिया कांच को पिघलाना नहीं, बल्कि **'थेरना' (सोने की पट्टी पर नक्काशी)** और **'वादा' (कांच में जड़ना)** है। 'थेवा' शब्द इन्हीं दो शब्दों (थेरना + वादा) से मिलकर बना है। इसमें कांच को पिघलाया नहीं जाता, बल्कि सोने की जाली को विशेष प्रक्रिया (ताप द्वारा) कांच के ऊपर जड़ा जाता है।

थेवा कला में कांच को पिघलाया नहीं जाता, बल्कि रंगे हुए कांच की सतह पर सोने का वर्क चिपकाकर नक्काशी की जाती है।

प्रश्न 55:

सही उत्तर: C

व्याख्या: कथन (A) (सत्य): कोफ्तगिरी मूलतः दमिश्क (सीरिया) की कला है जो पंजाब के रास्ते राजस्थान (विशेषकर **जयपुर और अलवर**) पहुँची। प्राचीन काल में तलवारों की मूठ, ढालों और खंजर जैसे **युद्ध के अस्त्र-शस्त्रों** को सुंदर और अलंकृत बनाने के लिए इस कला का उपयोग किया जाता था।

कारण (R) (असत्य): कारण गलत होने का तकनीकी आधार यह है कि कोफ्तगिरी में सतह को **गहरा खोदा नहीं जाता** (गहरा खोदकर तार भरना 'तहनिशां' या 'बीदरी' कला कहलाती है)।

कोफ्तगिरी की सही तकनीक: इसमें फौलाद (Steel) की सतह को पहले पत्थर से घिसकर **खुरदरा** बनाया जाता है और फिर उस पर सोने या चांदी के पतले तारों से डिजाइन बनाकर प्रेस किया जाता है। अंत में उसे गर्म करके हकीक पत्थर से पॉलिश की जाती है।

कोफ्तगिरी में तार सतह पर बिठाए जाते हैं, जबकि धातु को गहरा खोदकर तार भरना **'तहंनिशा'** (अलवर) कहलाता है।

प्रश्न 56:

सही उत्तर: A

व्याख्या: निष्कर्ष 1 (सत्य): मोलेला (राजसमंद) की टेराकोटा कला में प्रयुक्त होने वाली मिट्टी को विशेष तकनीक से तैयार

wincompete

किया जाता है। बनास नदी की लाल मिट्टी में **गधे के गोबर** और **धान की भूसी** का एक निश्चित अनुपात में मिश्रण किया जाता है। यह मिश्रण मिट्टी को लचीलापन प्रदान करता है और सूखने या पकाने (Firing) के दौरान मूर्तियों को चटकने से बचाकर मजबूती प्रदान करता है।

निष्कर्ष 2 (असत्य): यह कहना पूरी तरह गलत है कि इनका कोई धार्मिक महत्व नहीं है। वास्तव में, मोलेला कला का मुख्य आधार ही **धार्मिक** है। यहाँ निर्मित **'मृण्मूर्तियाँ' (Relief Plaques)** विशेष रूप से लोक देवताओं जैसे **देवनारायण जी** और **धर्मराज जी** की होती हैं। राजस्थान, मध्य प्रदेश और गुजरात के आदिवासी व ग्रामीण लोग हर साल यहाँ आकर इन मूर्तियों को खरीदते हैं और अपने देवस्थानों में स्थापित करते हैं।

प्रश्न 57:

सही उत्तर: D

व्याख्या: कथन 1 (सत्य): सांगानेरी और बगरू प्रिंट में मुख्य अंतर उनकी पृष्ठभूमि (Background) का होता है। **सांगानेरी प्रिंट** में लट्ठा या मलमल के **सफेद कपड़ों** पर छपाई की जाती है। इसके विपरीत, **बगरू प्रिंट** में प्राकृतिक रंगों का अधिक प्रयोग होता है और इसकी पृष्ठभूमि **मटमैली (Off-white)** या क्रीम रंग की होती है।

कथन 2 (सत्य): बगरू प्रिंट अपनी **'दाबू' (Dabu)** तकनीक के लिए प्रसिद्ध है। इसमें जिस स्थान पर रंग नहीं चढ़ाना होता, वहां मिट्टी, गोंद और चूने की लेई (Paste) लगाकर उसे दबा (रजिस्टर) दिया जाता है। इस प्रक्रिया को 'दाबू' कहते हैं। मिट्टी के दाबू को 'वाडा' भी कहा जाता है।

कथन 3 (सत्य): सांगानेरी प्रिंट अपनी बारीक रेखाओं और सूक्ष्म बेल-बूटों के लिए विश्व विख्यात है। इसकी इसी सूक्ष्मता और लिनन/मलमल पर की जाने वाली छपाई की विशिष्ट शैली के कारण इसे **'कैलिको प्रिंटिंग' (Calico Printing)** के नाम से भी जाना जाता है।

प्रश्न 58:

सही उत्तर: C

व्याख्या: लहरिया - जयपुर (संगत): जयपुर का लहरिया विश्व प्रसिद्ध है, विशेषकर श्रावण मास में तीज के अवसर पर 'समुद्र लहर' का लहरिया अत्यधिक लोकप्रिय है।

मोठड़ा - जोधपुर (संगत): जब लहरिये की धारियाँ एक-दूसरे को काटती हुई (Cross) बनाई जाती हैं, तो उसे 'मोठड़ा' कहते हैं। यह जोधपुर की विशिष्ट पहचान है।

जाजम और आज़म प्रिंट - चित्तौड़गढ़ (असंगत का सही तथ्य): जाजम और आज़म प्रिंट का मुख्य केंद्र **चित्तौड़गढ़ (आकोला ग्राम)** है, न कि बाड़मेर।

- **जाजम प्रिंट:** इसका उपयोग मुख्य रूप से मांगलिक अवसरों पर फर्श पर बिछाने के मोटे कपड़ों पर किया जाता है।
- **आज़म प्रिंट:** यह ओढ़नियों के लिए प्रसिद्ध है और इसमें लाल व काले रंगों की प्रधानता होती है।

अजरख प्रिंट - बाड़मेर (संगत): बाड़मेर का अजरख प्रिंट अपनी ज्यामितीय आकृतियों और **नीले व लाल** रंगों के संतुलन के लिए प्रसिद्ध है। इसके साथ ही बाड़मेर का **मलीर प्रिंट** (कथई व काला रंग) भी प्रसिद्ध है।

जाजम और आज़म प्रिंट **आकोला (चित्तौड़गढ़)** के प्रसिद्ध हैं, बाड़मेर के नहीं।

प्रश्न 59:

सही उत्तर: B

व्याख्या: कथन (A) (सत्य): अजरख प्रिंट अपनी **ज्यामितीय आकृतियों** (Geometric Patterns) के लिए पूरे विश्व में अद्वितीय माना जाता है। इसमें तुर्की और मध्य एशियाई शैली के समान वर्गाकार, षटकोणीय और तारों जैसे ज्यामितीय डिजाइनों का सुंदर तालमेल होता है।

कारण (R) (सत्य): अजरख प्रिंट की सबसे कठिन और प्रमुख तकनीकी विशेषता यह है कि इसमें कपड़े के **दोनों ओर (Both sides/Double sided)** छपाई की जाती है। दोनों तरफ की छपाई इतनी सटीक होती है कि कपड़े के सीधे और उल्टे भाग को पहचानना मुश्किल हो जाता है। यही वह तकनीक है जो इसे अद्वितीय ज्यामितीय सौंदर्य प्रदान करती है, क्योंकि दोनों तरफ पैटर्न का मिलान करना उच्च कौशल का कार्य है।

ज्यामितीय आकृतियाँ अजरख की विशेषता हैं, लेकिन इसका 'कारण' दोनों तरफ छपाई होना नहीं है; दोनों तरफ छपाई इसकी एक अन्य स्वतंत्र विशेषता है।

प्रश्न 60:

सही उत्तर: A

व्याख्या: निष्कर्ष 1 (सत्य): बादला जोधपुर की एक विशिष्ट हस्तकला है। यह **जस्ते (Zinc)** की धातु से बना एक जल-पात्र होता है। इसकी वैज्ञानिक विशेषता यह है कि जस्ते के कारण इसमें पानी लंबे समय तक ठंडा रहता है। इस पात्र की सुंदरता और उपयोगिता बढ़ाने के लिए इसके ऊपर **कपड़े या चमड़े का कलात्मक आवरण** (Cover) चढ़ाया जाता है, जो एक इंसुलेटर का काम करता है। इसी कारण इसे 'देसी थर्मस' कहा जाता है।

निष्कर्ष 2 (असत्य): बादला का निर्माण मिट्टी से नहीं, बल्कि **धातु (जस्ता)** से किया जाता है। मिट्टी को उच्च तापमान पर पकाकर बनाई जाने वाली कला 'टेराकोटा' (जैसे मोलेला की

कला) कहलाती है। बादला पूरी तरह से एक धात्विक हस्तशिल्प है।

प्रश्न सहित सही उत्तर और व्याख्या

प्रश्न: 61

सही उत्तर: B

व्याख्या: विकल्प B (सत्य): मीनाकारी की कला में **लाल रंग (Ruby Red)** का प्रयोग सबसे चुनौतीपूर्ण माना जाता है क्योंकि इसका 'मेल्टिंग पॉइंट' (गलनांक) बहुत सटीक होना चाहिए। जयपुर के मीनाकार इस कार्य में विश्व भर में प्रसिद्ध हैं। पारंपरिक रूप से माना जाता है कि उत्तम श्रेणी की लाल मीनाकारी केवल जयपुर के वातावरण और वहाँ के सिद्धहस्त कलाकारों के कौशल से ही संभव है।

विकल्प A (असत्य): प्रतापगढ़ की थेवा कला में हरे रंग के कांच का प्रयोग प्रधानता से होता है, न कि केवल लाल रंग की मीनाकारी का। मीनाकारी और थेवा कला दो अलग-अलग विधाएँ हैं।

विकल्प C (असत्य): लाल रंग की मीनाकारी के लिए **सोना (Gold)** सबसे उपयुक्त और अनिवार्य आधार माना जाता है। सोने पर लाल रंग सबसे अधिक निखर कर आता है, जबकि चांदी पर नीला और हरा रंग बेहतर चढ़ता है।

विकल्प D (असत्य): मीनाकारी में रंगों के लिए धात्विक ऑक्साइड्स का प्रयोग होता है। लाल रंग प्राप्त करने के लिए पारे का नहीं, बल्कि **सोने के यौगिकों (Gold Chloride)** या विशेष रसायनों का सूक्ष्म प्रयोग किया जाता है।

प्रश्न: 62

सही उत्तर: A

व्याख्या: निष्कर्ष 1 (सत्य): 'पोमचा' कमल के फूल के अभिप्राय वाली एक विशेष ओढ़नी है। राजस्थान में प्रसव के बाद **'पीला पोमचा'** विशेष रूप से **वंश वृद्धि (पुत्र जन्म)** के प्रतीक के रूप में जच्चा (माता) को उसके पीहर पक्ष की ओर से भेंट किया जाता है। इसी प्रकार, **गुलाबी पोमचा** पुत्री के जन्म पर दिया जाता है। यह राजस्थान की एक गहरी जड़ें जमा चुकी सांस्कृतिक परंपरा है।

निष्कर्ष 2 (असत्य): यह कहना गलत है कि पोमचा केवल अविवाहित बालिकाओं द्वारा उपयोग किया जाता है। वास्तव में, पोमचा मुख्य रूप से **प्रसूता (विवाहित महिलाओं)** द्वारा संतान जन्म के मांगलिक अवसरों पर पहना जाता है। अविवाहित बालिकाओं के लिए राजस्थान में **'कटकी'** नामक ओढ़नी का प्रचलन है।

प्रश्न: 63

सही उत्तर: B

व्याख्या: कथन 1 (सत्य): खंडेला (सीकर) राजस्थान में गोटा उद्योग का सबसे बड़ा और पारंपरिक केंद्र है। यहाँ का गोटा अपनी गुणवत्ता और चमक के लिए पूरे राजस्थान में प्रसिद्ध है। जयपुर भी गोटा व्यापार का एक बड़ा केंद्र है।

कथन 2 (असत्य): गोटे के विभिन्न प्रकारों में लप्पा-लप्पी (चौड़ा गोटा), किरण (किनारी पर लगने वाला) और **बांकड़ी** प्रसिद्ध हैं। 'बाड़मेरी' गोटे का कोई प्रकार नहीं है; बल्कि **'बांकड़ी'** वह गोटा है जिसे हाथ से मोड़कर बेल-बूटे बनाए जाते हैं। गोटे के अन्य प्रकार 'गोखरू' और 'नक्षी' भी हैं।

कथन 3 (सत्य): जोधपुर का **सालावास गाँव** अपनी सूती और ऊनी दरियों के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध है। यहाँ की दरियाँ अपनी मजबूती और पारंपरिक डिजाइनों के कारण पर्यटकों और निर्यातकों के बीच लोकप्रिय हैं।

लप्पा-लप्पी गोटे के प्रकार हैं, लेकिन 'बाड़मेरी' गोटे का प्रकार नहीं है। सालावास दरियों हेतु प्रसिद्ध है।

प्रश्न: 64

सही उत्तर: D

व्याख्या: कथन 1 (सत्य): बस्सी (चित्तौड़गढ़) की काष्ठ कला लगभग 400 वर्ष पुरानी है। इसके जन्मदाता या **'आदि पुरुष' प्रभातजी सुथार** माने जाते हैं। उन्हीं के वंशज आज भी इस कला को जीवित रखे हुए हैं।

कथन 2 (सत्य): 'कावड़' लकड़ी से बना एक बहु-कपाटीय मंदिरनुमा ढांचा होता है। इसे 'चलता-फिरता तीर्थ' भी कहते हैं। इसके विभिन्न कपाटों को एक-एक कर खोलते हुए 'कावड़िया भाट' पौराणिक कथाएं (जैसे रामायण या लोक देवताओं की गाथाएं) सुनाते हैं। इसमें लाल रंग की प्रधानता होती है।

कथन 3 (सत्य): 'बेवाण' लकड़ी से बना एक छोटा सिंहासननुमा मंदिर होता है, जिसमें भगवान की मूर्ति को विराजमान किया जाता है। इसे **'चलत देव विमान'** कहा जाता है। विशेष रूप से **जलझूलनी एकादशी** के दिन ठाकुर जी को रेवाड़ी में बिठाकर जलाशय तक स्नान कराने हेतु 'बेवाण' का ही प्रयोग किया जाता है।

प्रश्न: 65

सही उत्तर: B

व्याख्या: कथन (A) (सत्य): उस्ता कला को तकनीकी शब्दावली में **'मुनव्वत कला'** या 'कुप्पी कला' भी कहा जाता है। 'मुनव्वत' शब्द का संबंध सोने के बारीक काम से है।

wincompete

कारण (R) (सत्य): यह तथ्य बिल्कुल सही है कि **हिसामुद्दीन उस्ता** इस कला के सबसे महान कलाकार थे और उन्हें 1986 में भारत सरकार द्वारा **'पद्मश्री'** प्रदान किया गया था।

कारण (R) एक पुरस्कार और कलाकार के बारे में जानकारी दे रहा है, जबकि कथन (A) कला के तकनीकी नाम (Terminology) के बारे में है। कारण (R) यह स्पष्ट नहीं करता कि उस्ता कला को 'मुनव्वत' *क्यों* कहते हैं। (व्याख्या तब सही होती जब कारण में यह लिखा होता कि 'सोने की नक्काशी के कारण इसे मुनव्वत कहते हैं')।

प्रश्न: 66

सही उत्तर: A

व्याख्या: निष्कर्ष 1 (सत्य): कावड़ को **'भ्रामक' या 'रहस्यमयी' मंदिर** इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह कई कपाटों (परतों) में बना होता है। जैसे-जैसे कथावाचक (कावड़िया भाट) इसके एक-एक कपाट को खोलता है, नए-नए पात्र और दृश्य सामने आते जाते हैं। यह दर्शकों के लिए एक दृश्य भ्रम (Illusion) पैदा करता है कि एक छोटे से ढांचे के भीतर पूरी रामायण या महाभारत कैसे समाहित है। अंत में मुख्य कपाट खुलने पर भगवान के दर्शन होते हैं।

निष्कर्ष 2 (असत्य): कावड़ का निर्माण कागज के गत्तों से नहीं, बल्कि **लकड़ी (मुख्यतः अडू की लकड़ी)** से किया जाता है। कागज की लुगदी या गत्तों से बनी कला **'मथेरणा'** या **'पेपर मैशी'** (Paper Mache) कहलाती है। कावड़ एक पूर्णतः **काष्ठ कला (Woodcraft)** है, जिस पर लाल रंग की प्रधानता के साथ चित्रकारी की जाती है।

प्रश्न: 67

सही उत्तर: A

व्याख्या: निष्कर्ष 1 (सत्य): भीनमाल (जालौर) की मोजरियाँ पूरे राजस्थान में अपनी **विशिष्ट कशीदाकारी** (Embroidery) और टिकाऊपन के लिए प्रसिद्ध हैं। इन पर रेशम के धागों और चमकीले तारों से सुंदर बेल-बूटे उकेरे जाते हैं। भीनमाल के अलावा जालौर का **लेटा ग्राम** भी मोजरियों और खेसलों के लिए जाना जाता है।

निष्कर्ष 2 (असत्य): यह कहना गलत है कि मोजरियाँ केवल ऊँट या भैंस की खाल से ही बनाई जाती हैं या अन्य चमड़े वर्जित हैं। मोजरियों के निर्माण में मुख्य रूप से **बकरी और भेड़** के चमड़े का प्रयोग किया जाता है क्योंकि यह कोमल और लचीला होता है। ऊँट की खाल का प्रयोग विशेष रूप से बीकानेर की 'उस्ता कला' और 'कुप्पियों' के लिए होता है। गाय के चमड़े का प्रयोग धार्मिक भावनाओं के कारण सामान्यतः टाल दिया जाता है, लेकिन अन्य पशुओं के चमड़े का उपयोग तकनीकी रूप से संभव है।

प्रश्न: 68

सही उत्तर: D

व्याख्या: खेसला - लेटा गाँव, जालौर (संगत): जालौर का **लेटा ग्राम** अपने 'खेसलों' (ओढ़ने का एक मोटा सूती वस्त्र) के लिए पूरे राजस्थान में प्रसिद्ध है। यहाँ के खेसले अपनी बुनावट और पारंपरिक डिजाइनों के लिए जाने जाते हैं।

नमदे - टोंक (संगत): टोंक जिला **'नमदा'** (भेड़ की ऊन को कूट-कूट कर बनाया गया वस्त्र या दरी) उद्योग का मुख्य केंद्र है। यह कला मूलतः अफगानिस्तान से भारत आई थी।

गोटा-पत्ती - खंडेला, सीकर (संगत): खंडेला गोटा उद्योग का सबसे पुराना और प्रमुख केंद्र है। यहाँ लप्पा-लप्पी और किरण जैसे विभिन्न प्रकार के गोटे तैयार किए जाते हैं।

पाव रजाई - जयपुर (असंगत का सही तथ्य): विश्व प्रसिद्ध **'पाव रजाई'** (मात्र 250 ग्राम रुई से बनी बेहद हल्की और गर्म रजाई) का मुख्य केंद्र **जयपुर** है, न कि जोधपुर। जयपुर की पाव रजाई अपनी कोमलता और गर्माहट के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर निर्यात की जाती है।

प्रश्न: 69

सही उत्तर: B

व्याख्या: विकल्प B (सत्य): 'मोठड़ा' लहरिया का ही एक उन्नत रूप है। लहरिया में धारियाँ एक ही दिशा में (विकर्ण रूप में) होती हैं, लेकिन जब इन धारियों को विपरीत दिशा से काटते हुए दोबारा रंगा जाता है, जिससे कपड़े पर **'चेक' (Cross)** या वर्गनुमा डिजाइन बन जाती है, तो उसे **'मोठड़ा'** कहा जाता है। जोधपुर का मोठड़ा पूरे राजस्थान में अत्यंत प्रसिद्ध और मांगलिक माना जाता है।

विकल्प A (असत्य): कपड़े पर छोटी-छोटी बिंदीदार डिजाइन को **'चुनरी'** या 'बंधेज' की मूल इकाई कहा जाता है। इसमें छोटे-छोटे दाने या बूटे उभारे जाते हैं।

विकल्प C (असत्य): पूरे कपड़े को एक ही रंग में रंगना सामान्य 'रंगाई' है। यदि वह गहरा लाल है, तो उसे अक्सर 'चूनड़' के आधार के रूप में देखा जाता है, लेकिन यह मोठड़ा नहीं है।

विकल्प D (असत्य): कपड़े के किनारों पर चांदी की बेल-बूटी टांकना **'गोटा-पत्ती'** या 'जरी' का काम कहलाता है, न कि बंधेज की कोई तकनीक।

प्रश्न: 70

सही उत्तर: B

व्याख्या: विकल्प B (सत्य): थेवा कला अपनी **अत्यधिक गोपनीयता** के लिए जानी जाती है। यह कला प्रतापगढ़ के केवल

winncompete

एक ही परिवार (**राजसोनी परिवार**) तक सीमित है। इस परिवार की यह परंपरा रही है कि वे इस कला की बारीकियां अपने परिवार की **बेटियों और बहुओं को भी नहीं सिखाते**, ताकि यह कला दूसरे परिवारों में न चली जाए। यह केवल परिवार के **पुरुष सदस्यों** को ही सिखाई जाती है।

प्रश्न: 71

सही उत्तर: C

व्याख्या: कथन 1 (असत्य): 'लप्पा' और 'लप्पी' का नामकरण गोटे की लंबाई के आधार पर नहीं, बल्कि उसकी **चौड़ाई (Width)** के आधार पर किया गया है।

कथन 2 (सत्य): गोटे की अधिक चौड़ाई वाले भाग को **'लप्पा'** कहा जाता है, जबकि कम चौड़ाई (पतले) वाले गोटे को **'लप्पी'** कहते हैं। यह गोटा-पत्ती कार्य के सबसे सामान्य और महत्वपूर्ण प्रकार हैं।

कथन 3 (सत्य): राजस्थान में दरी उद्योग के तीन मुख्य केंद्र हैं: **सालावास (जोधपुर)**, **टांकला (नागौर)** और **लवाण (दौसा)**। सालावास अपनी सूती और ऊनी दरियों के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध है, वहीं टांकला गाँव अपनी मजबूत बुनावट वाली दरियों के लिए जाना जाता है।

लप्पा और लप्पी गोटे की **चौड़ाई** के आधार पर नाम दिए गए हैं, न कि लंबाई के आधार पर।

प्रश्न: 72

सही उत्तर: D

व्याख्या: कथन (A) (असत्य): यह कथन गलत है क्योंकि सांगानेर के हस्तनिर्मित कागज की सबसे बड़ी विशेषता ही यह है कि इसमें **पेड़ों की लकड़ी (Wood Pulp) का उपयोग नहीं किया जाता**। इसी कारण इसे **'पर्यावरण के अनुकूल' (Eco-friendly)** माना जाता है। लकड़ी का उपयोग न होने से वनों की कटाई नहीं होती, जो इसे टिकाऊ और हरित उत्पाद बनाता है।

कारण (R) (सत्य): यह तथ्य बिल्कुल सही है। सांगानेर में कागज बनाने के लिए लुगदी तैयार करने हेतु **पुराने सूती कपड़ों के टुकड़ों (Chindi/Hosiery waste)**, रद्दी कागज और प्राकृतिक अपशिष्ट जैसे फूलों के अवशेषों का पुनर्चक्रण (Recycle) किया जाता है। फूलों के अवशेषों से कागज को प्राकृतिक बनावट और सुंदरता मिलती है।

प्रश्न: 73

सही उत्तर: C

व्याख्या: तीर-कमान - चंद्रूजी का गढ़ा, बांसवाड़ा (संगत): बांसवाड़ा का **'चंद्रूजी का गढ़ा'** और डूंगरपुर का **'बॉडीगामा'** गाँव तीर-कमान निर्माण के लिए पूरे राजस्थान में प्रसिद्ध हैं। यहाँ मुख्य रूप से भील जनजाति द्वारा उपयोग किए जाने वाले पारंपरिक तीर-कमान बनाए जाते हैं।

रमकड़ा उद्योग - गलियाकोट, डूंगरपुर (संगत): गलियाकोट में **'सोप स्टोन' (घिया पत्थर)** को तराशकर खिलौने और सजावटी वस्तुएं बनाई जाती हैं, जिसे स्थानीय भाषा में 'रमकड़ा उद्योग' कहा जाता है। यह दाऊदी बोहरा समाज का प्रमुख केंद्र भी है।

काठ का रैन बसेरा - झालावाड़ (असंगत का सही तथ्य): लकड़ी से बना यह प्रसिद्ध विश्राम गृह **झालावाड़** में स्थित है, न कि चित्तौड़गढ़ में। इसे कृष्ण सागर झील के किनारे देहरादून के वन शोध संस्थान के कलाकारों द्वारा बनाया गया था। यह अपनी वास्तुकला के लिए अद्वितीय है।

कावड़ निर्माण - बस्सी, चित्तौड़गढ़ (संगत): चित्तौड़गढ़ का **बस्सी** गाँव काष्ठ कला का सबसे बड़ा केंद्र है। यहाँ कावड़, बेवाण और गणगौर की मूर्तियों का निर्माण मुख्य रूप से सुथार जाति के कलाकारों द्वारा किया जाता है।

'काठ का रैन बसेरा' (लकड़ी का महल) **झालावाड़** में स्थित था, चित्तौड़गढ़ में नहीं।

प्रश्न: 74

सही उत्तर: B

व्याख्या: विकल्प B (सत्य): मथेरणा कला बीकानेर की एक विशिष्ट लोक कला है। इसमें **गीली दीवार (Fresh Plaster)** पर चूने और प्राकृतिक रंगों के माध्यम से धार्मिक चित्र उकेरे जाते हैं। इसे स्थानीय भाषा में **'आला-गीला'**, 'आरायश' या 'पणा' पद्धति भी कहा जाता है। मथेरणा जाति के कलाकार जैन धर्म और पौराणिक कथाओं से संबंधित चित्र बनाने में निपुण होते हैं।

विकल्प A (असत्य): ऊँट की खाल पर सोने की सूक्ष्म नक्काशी **'उस्ता कला'** कहलाती है। यह मथेरणा कला से भिन्न है, यद्यपि दोनों ही बीकानेर की प्रसिद्ध कलाएँ हैं।

विकल्प C (असत्य): लकड़ी के खिलौने बनाने की कला मुख्य रूप से **उदयपुर** और **बस्सी (चित्तौड़गढ़)** की विशेषता है।

विकल्प D (असत्य): तलवारों पर चांदी के तारों की जड़ाई को **'कोफ्तगिरी'** कहा जाता है, जो मुख्य रूप से जयपुर और अलवर में प्रचलित है।

मथेरणा कला बीकानेर के जैन कलाकारों द्वारा की जाने वाली भित्ति चित्रकारी है। ऊँट की खाल वाली कला उस्ता कला कहलाती है।

प्रश्न: 75

सही उत्तर: B

wincompete

व्याख्या: विकल्प B (सत्य): सांगानेर (जयपुर) में स्थित **'कुमारप्पा राष्ट्रीय हस्तशिल्प संस्थान' (KNHPI)** भारत सरकार के खादी और ग्रामोद्योग आयोग (KVIC) के अधीन एक स्वायत्त संस्थान है। यह संस्थान हस्तनिर्मित कागज उद्योग के तकनीकी उन्नयन, अनुसंधान, प्रशिक्षण और गुणवत्ता नियंत्रण हेतु समर्पित है। सांगानेर का हस्तनिर्मित कागज अपनी पर्यावरण-अनुकूलता और "अम्ल-मुक्त" (Acid-free) होने के कारण अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध है।

विकल्प A (असत्य): कृपाल सिंह शेखावत का नाम **ब्लू पॉटरी** से जुड़ा है। उन्होंने जयपुर में ब्लू पॉटरी के विकास में अतुलनीय योगदान दिया, न कि हस्तनिर्मित कागज में।

विकल्प C (असत्य): बीकानेर स्थित 'कैमल हाइड ट्रेनिंग सेंटर' मुख्य रूप से **उस्ता कला** (ऊँट की खाल पर सोने की नक्काशी) के प्रशिक्षण हेतु समर्पित है।

विकल्प D (असत्य): राजस्थान ललित कला अकादमी एक प्रादेशिक संस्था है जो कला की सभी विधाओं के संवर्धन का कार्य करती है, लेकिन इसका मुख्यालय **जयपुर** में है और यह विशेष रूप से कागज निर्माण हेतु समर्पित संस्थान नहीं है।

प्रश्न: 76

सही उत्तर: A

व्याख्या: कथन 1 (सत्य): 'मदील' दशहरे के अवसर पर पहनी जाने वाली एक विशेष पगड़ी है। यह अक्सर जरी के काम से युक्त होती है। राजस्थान में अलग-अलग त्योहारों के लिए विशिष्ट पगड़ियाँ निर्धारित हैं, जिनमें मदील का संबंध दशहरे से है।

कथन 2 (सत्य): 'मोठड़े का साफा' (जिसमें धारियाँ एक-दूसरे को काटती हैं) मुख्य रूप से विवाह और अन्य मांगलिक अवसरों पर पहना जाता है। जोधपुर का साफा अपनी विशिष्ट शैली और बांधने के अंदाज के लिए विश्व प्रसिद्ध है।

कथन 3 (असत्य): 'केसरिया पगड़ी' का प्रयोग मुख्य रूप से युद्ध पर जाते समय (केसरिया करते समय) या **शौर्य के प्रतीकों** के रूप में किया जाता है। **होली** के अवसर पर मुख्य रूप से **'फागणिया'** (सफेद और लाल रंग के मेल वाली) या **'मंजील'** की पगड़ी पहनी जाती है। केसरिया पगड़ी को मांगलिक कार्यों और वीरता के उत्सवों से भी जोड़ा जाता है, लेकिन होली का विशिष्ट पहनावा 'फागणिया' है।

केसरिया पगड़ी युद्ध के समय पहनी जाती थी। दशहरे पर 'मदील' का रिवाज है।

प्रश्न: 77

सही उत्तर: C

व्याख्या: कथन (A) (सत्य): 'बृजेस' (Brijes/Breeches) राजस्थानी पुरुषों का एक पारंपरिक पहनावा है। यह चूड़ीदार पाजामे का ही एक रूप है, जो घुटनों से ऊपर काफी घेरेदार (ढीला) होता है और घुटनों से नीचे चूड़ीदार (तंग) होता है। प्राचीन काल में इसे मुख्य रूप से **शिकार (Hunting)** के समय और घुड़सवारी के दौरान पहना जाता था, क्योंकि इसकी बनावट घुड़सवारी के लिए बहुत आरामदायक होती थी। आज भी यह शादियों और औपचारिक राजस्थानी आयोजनों में शान का प्रतीक माना जाता है।

कारण (R) (असत्य): यह कहना पूरी तरह गलत है कि यह केवल दरबारी नर्तकों द्वारा पहना जाता था। वास्तव में, यह **राजपूतों और राजघरानों** के पुरुषों का एक प्रतिष्ठित पहनावा रहा है। यह यूरोपीय 'ब्रीचेस' (Breeches) और भारतीय चूड़ीदार पाजामे का एक अनूठा सम्मिश्रण है। इसका नर्तकों से कोई विशिष्ट संबंध नहीं है।

प्रश्न: 78

सही उत्तर: B

व्याख्या: 'चीड़ का पोमचा' विधवा महिलाओं द्वारा ओढ़ा जाने वाला काला पोमचा है, मांगलिक लाल वस्त्र नहीं।

प्रश्न: 79

सही उत्तर: A

व्याख्या: निष्कर्ष 1 (सत्य): 'अंगरखी' (जिसे बुगतरी भी कहा जाता है) शरीर के ऊपरी भाग में पहना जाने वाला वस्त्र है। इसके विभिन्न प्रकार और क्षेत्रीय नाम प्रचलित हैं। **तनसुख, गदर, मिर्जाई, डगला, कानो, डौढी और गाबा** आदि अंगरखी के ही भिन्न-भिन्न रूप या नाम हैं। सर्दी के दिनों में रुई भरकर बनाई गई अंगरखी को अक्सर 'गदर' या 'डगला' कहा जाता है।

निष्कर्ष 2 (असत्य): 'पछेवड़ा' ग्रीष्म ऋतु का वस्त्र नहीं है, बल्कि यह **शीत ऋतु (सर्दी)** में ओढ़ा जाने वाला एक **मोटा सूती चादर** जैसा वस्त्र है। यह रेशमी या बारीक नहीं होता, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में कड़ाके की ठंड से बचने के लिए इसे विशेष रूप से ऊन या मोटे कपास से तैयार किया जाता है। लू से बचने के लिए राजस्थान में साफे का पल्लू या अंगोछा काम में लिया जाता है।

प्रश्न: 80

सही उत्तर: D

व्याख्या: ढेपाड़ा - भील पुरुष (संगत): भील पुरुषों द्वारा पहनी जाने वाली **तंग धोती** को 'ढेपाड़ा' कहा जाता है। यह काफी मजबूत और चुस्त होती है जो पहाड़ी क्षेत्रों में आवागमन के अनुकूल है।

कछावू - भील महिला (संगत): भील महिलाओं द्वारा कमर पर **घुटनों तक पहने जाने वाले घाघरे** को 'कछावू' कहा जाता है।

wincompete

यह प्रायः गहरे लाल या काले रंग के छपाई वाले कपड़े से बना होता है।

पीरिया - भील महिला (संगत): भील जनजाति में विवाह के अवसर पर दुल्हन द्वारा पहने जाने वाले **पीले रंग के लहंगे या ओढ़नी** को 'पीरिया' कहा जाता है। यह मांगलिकता का प्रतीक है।

खोयतू - भील पुरुष (असंगत का सही तथ्य): 'खोयतू' भील पुरुषों का सिर का साफा नहीं है। वास्तव में, लंगोटिया भीलों में पुरुषों द्वारा पहनी जाने वाली **कमर की लंगोटी** को **'खोयतू'** कहा जाता है।

'खोयतू' भील पुरुषों की लंगोटी है। सिर पर बांधा जाने वाला कपड़ा 'फालू' या 'पोतिया' कहलाता है।

प्रश्न: 81

सही उत्तर: A

व्याख्या: कथन 1 (सत्य): 'मेमंद' राजस्थान में स्त्रियों द्वारा **सिर पर (मस्तक)** पहना जाने वाला एक अत्यंत लोकप्रिय और पारंपरिक आभूषण है। लोकगीतों में भी इसका बार-बार वर्णन मिलता है (जैसे- "लाया मेमंद आभूसण...")।

कथन 2 (सत्य): 'ओगनिया' (या ओगन्या) कान के **ऊपरी हिस्से** में पहना जाने वाला एक विशिष्ट आभूषण है, जिसका आकार पीपल के पत्ते जैसा (पत्तीनुमा) होता है। इसे 'पीपल पन्ना' के समान ही माना जाता है।

कथन 3 (असत्य): 'बोरला' गले का आभूषण नहीं है। यह **सिर (माथे)** पर पहना जाने वाला सुप्रसिद्ध आभूषण है, जो दिखने में लट्टू या बेर के समान गोल होता है। गले में पहने जाने वाले प्रमुख आभूषणों में हार, हंसली, तिमणिया और मादलिया आदि आते हैं।

प्रश्न: 82

सही उत्तर: C

व्याख्या: कथन (A) (सत्य): राजस्थान में आभूषण केवल सौंदर्य प्रसाधन नहीं हैं, बल्कि उनके पीछे गहरा **एक्यूप्रेशर और स्वास्थ्य विज्ञान** छिपा है। उदाहरण के लिए, कानों को छेदना (कर्णवेध) और उसमें धातु के आभूषण पहनना तंत्रिका तंत्र को सुदृढ़ करता है। इसी प्रकार, नाक में 'नथ' पहनने को आयुर्वेद में श्वसन तंत्र और महिला प्रजनन स्वास्थ्य से जोड़कर देखा जाता है। पैरों में पहनी जाने वाली चांदी शरीर की गर्मी को नियंत्रित करने और पृथ्वी की ऊर्जा से जुड़ने का माध्यम मानी जाती है।

कारण (R) (असत्य): यह तथ्य पूरी तरह गलत है कि राजस्थानी आभूषण *केवल* लकड़ी और लाख के बने होते हैं। राजस्थान के आभूषणों का मुख्य आधार **सोना (Gold), चांदी (Silver), हाथी दांत, कुंदन, मीनाकारी और रत्न** हैं। हालाँकि लाख के आभूषण (जैसे लाख की चूड़ियाँ) प्रसिद्ध हैं, लेकिन अधिकांश पारंपरिक आभूषण बहुमूल्य धातुओं के बने होते हैं। धातुओं के घर्षण का शरीर पर प्रभाव पड़ता है, लेकिन यह कहना कि वे 'केवल' लकड़ी/लाख के हैं और रक्तचाप नियंत्रित करते हैं, एक भ्रामक और अधूरा तर्क है।

प्रश्न: 83

सही उत्तर: D

व्याख्या: 'चूँप' दाँत का आभूषण है। नाक का आभूषण 'चोंप' कहलाता है।

प्रश्न: 84

सही उत्तर: A

व्याख्या: निष्कर्ष 1 (सत्य): राजस्थानी आभूषणों में इन दो नामों का उच्चारण लगभग समान होने के कारण अक्सर भ्रम होता है, लेकिन इनका स्थान पूरी तरह अलग है:

- **चोंप (Chonp):** यह **नाक** का आभूषण है। इसे 'चूप' (बड़ी 'ऊ' की मात्रा के बिना) भी कह दिया जाता है, लेकिन मानक रूप में 'चोंप' नाक के लिए प्रयुक्त होता है।
- **चूँप (Chump):** यह **दाँत** का आभूषण है। इसमें दाँत के बीच में छोटा सा छेद करके सोने की मेख (कीली) जड़ी जाती है। इसे 'मेख' या 'रखन' के नाम से भी जाना जाता है।

निष्कर्ष 2 (असत्य): 'चूँप' धारण करना किसी विशिष्ट लिंग या केवल आदिवासियों तक सीमित नहीं है। यद्यपि ग्रामीण और जनजातीय क्षेत्रों में इसका प्रचलन अधिक है, लेकिन यह **पुरुषों और महिलाओं दोनों** द्वारा समान रूप से धारण किया जा सकता है। यह सौंदर्य और संपन्नता का प्रतीक माना जाता है।

प्रश्न: 85

सही उत्तर: C

व्याख्या: गोखरू - कलाई (संगत): 'गोखरू' महिलाओं द्वारा कलाई पर पहना जाने वाला एक प्रमुख आभूषण है। यह अक्सर चांदी या सोने का बना होता है और इस पर छोटे-छोटे दानेदार उभार होते हैं। इसे चूड़ियों के साथ पहना जाता है।

रखड़ी - सिर/मस्तक (संगत): 'रखड़ी' सुहाग का प्रतीक मानी जाती है और इसे सिर के मध्य (माथे के ऊपर) पहना जाता है। यह आकार में गोल और भारी होती है, जिसे 'शीशफूल' के साथ भी जोड़ा जाता है।

सुरलिया - कान (असंगत का सही तथ्य): 'सुरलिया' (या सुरल्या) **कान** में पहना जाने वाला आभूषण है, न कि नाक का। यह अक्सर कान के निचले हिस्से में पहना जाता है और ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत लोकप्रिय है।

wincomplete

- **नाक के प्रमुख आभूषण:** नथ, लोंग, चोंप, बारी, भँवरिया और काँटा।

अरसी - हाथ के अंगूठे की अंगूठी (संगत): हाथ के अंगूठे में पहनी जाने वाली विशेष बड़ी अंगूठी को 'अरसी' कहा जाता है। इसमें अक्सर एक छोटा दर्पण (शीशा) लगा होता है, जिससे महिलाएं अपना चेहरा देख सकती थीं।

'सुरलिया' कान का आभूषण है, जिसे छेद में पहना जाता है।

प्रश्न: 86

सही उत्तर: A

व्याख्या: कथन (A) (सत्य): 'नांदणा' (या नांदणा) राजस्थान के वस्त्र इतिहास में **प्राचीनतम (Oldest)** वस्त्र माना जाता है। यह एक प्रकार का घाघरा है जिसका प्रयोग मुख्य रूप से आदिवासी महिलाओं द्वारा किया जाता है। ऐतिहासिक साक्ष्यों और परंपराओं के अनुसार, यह हस्तशिल्प की सबसे पुरानी जीवित शैलियों में से एक है।

कारण (R) (सत्य): नांदणा की मुख्य पहचान इसमें प्रयुक्त होने वाला **नीला रंग** और उस पर बनी विशिष्ट **छींट (Prints)** है। इसमें अक्सर गहरे नीले रंग की पृष्ठभूमि पर छोटे-छोटे बूटे या ज्यामितीय आकृतियाँ उकेरी जाती हैं। यह विशेष रूप से **भील जनजाति** की महिलाओं में अपनी मजबूती और सांस्कृतिक जुड़ाव के कारण अत्यंत लोकप्रिय है।

व्याख्या का संबंध: कारण (R) यह स्पष्ट करता है कि नांदणा अपनी विशिष्ट निर्माण शैली (नीले रंग की छींट) और भील जनजाति में इसकी प्राचीन जड़ें होने के कारण ही इसे 'प्राचीनतम वस्त्र' की श्रेणी में रखा जाता है।

प्रश्न: 87

सही उत्तर: A

व्याख्या: निष्कर्ष 1 (सत्य): 'आत्मसुख' राजस्थान में कड़ाके की ठंड (तेज सर्दी) से बचाव हेतु पहना जाने वाला सबसे उत्कृष्ट वस्त्र है। यह एक प्रकार का लंबा, ढीला और रुईदार अंगरखा जैसा होता है, जिसे अक्सर **अंगरखी के ऊपर** पहना जाता है। इसकी बनावट कश्मीरी 'फिरन' से मिलती-जुलती होती है और यह पूरे शरीर को ढक लेता है, जिससे इसे 'आत्मा को सुख देने वाला' अर्थात् 'आत्मसुख' कहा जाता है।

निष्कर्ष 2 (असत्य): यद्यपि महाराजा **माधोसिंह प्रथम** का विशाल 'आत्मसुख' विश्व प्रसिद्ध है, परंतु यह **अजमेर संग्रहालय में नहीं**, बल्कि **सिटी पैलेस (मुबारक महल), जयपुर** के संग्रहालय में सुरक्षित है। यह आत्मसुख अपनी विशालता (लगभग 250 किलो वजन की रुई और कपड़े के साथ) के लिए जाना जाता है, जो तत्कालीन राजस्थानी वेशभूषा की भव्यता का प्रतीक है।

प्रश्न: 88

सही उत्तर: C

व्याख्या: 'कडुल्या' पैर का आभूषण है। उंगलियों में 'बींटी' या 'दामणा' पहना जाता है।

प्रश्न: 89

सही उत्तर: C

व्याख्या: कथन 1 (सत्य): लहरिया श्रावण (सावन) मास का मुख्य पहनावा है। राजस्थान में विशेष रूप से **तीज** के अवसर पर स्त्रियाँ लहरिया की ओढ़नी और पुरुष लहरिया का साफा धारण करते हैं। यह वर्षा ऋतु के उमंग और हरियाली का प्रतीक माना जाता है।

कथन 2 (सत्य): जयपुर का लहरिया पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। यहाँ का **'प्रतापशाही' लहरिया** ऐतिहासिक रूप से अत्यंत लोकप्रिय रहा है। इसके अतिरिक्त, जयपुर का 'राजशाही' और 'समुद्र लहर' (दो रंगों वाला) लहरिया भी अपनी बारीकी के लिए जाना जाता है।

कथन 3 (असत्य): जब लहरिया की आड़ी धारियाँ एक-दूसरे को क्रॉस करती (काटती) हुई बनाई जाती हैं, तो उसे 'बंधेज' नहीं, बल्कि **'मोठड़ा'** कहा जाता है। 'बंधेज' एक व्यापक शब्द है जिसमें लहरिया, मोठड़ा, चुनरी और पोमचा सभी शामिल हैं, लेकिन धारियों के कटने की विशिष्ट तकनीक 'मोठड़ा' कहलाती है।

प्रश्न: 90

सही उत्तर: C

व्याख्या: तनसुख - अंगरखी (संगत): 'तनसुख' अंगरखी का ही एक परिष्कृत रूप है। जैसा कि नाम से स्पष्ट है (तन को सुख देने वाला), यह शरीर के ऊपरी भाग में पहना जाने वाला आरामदायक वस्त्र है। इसके अन्य रूप 'गदर' और 'डगला' भी हैं।

घूँघी - वर्षा/सर्दी का वस्त्र (संगत): 'घूँघी' विशेष रूप से ऊन या मोटे सूती कपड़े से बना एक चोगानुमा वस्त्र होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में चरवाहे और किसान इसका उपयोग वर्षा से बचने (बरसाती के रूप में) और तेज सर्दी से सुरक्षा हेतु करते हैं।

फालू - भील पुरुषों का तौलिया (असंगत का सही तथ्य): जनजातीय संस्कृति (मुख्यतः भील जनजाति) में **'फालू'** कमर पर बाँधी जाने वाली धोती नहीं, बल्कि शरीर पर लपेटा जाने वाला या सिर पर बाँधा जाने वाला एक **बड़ा तौलिया/अंगोछा** है।

विशेष नोट: भील पुरुषों द्वारा पहनी जाने वाली तंग धोती को **'ढेपाड़ा'** कहा जाता है, जबकि कमर की लंगोटी को **'खोयतू'** कहते हैं।

Wincompete

पेचा - पगड़ी का भाग (संगत): पगड़ी के ऊपर जो चमकीला या जरीदार कपड़ा लपेटा जाता है या जो सिरा ऊपर की ओर शोभा बढ़ाता है, उसे 'पेचा' कहा जाता है।

'फालू' भील पुरुषों द्वारा सिर पर बांधा जाने वाला गमछा है, धोती नहीं।

प्रश्न: 91

सही उत्तर: A

व्याख्या: कथन 1 (सत्य): 'हंसली' (या हँसली) एक ठोस और भारी धातु (सोना या चांदी) का बना आभूषण होता है, जिसे मुख्य रूप से **छोटे बच्चों** को बुरी नजर से बचाने और स्वास्थ्य की दृष्टि से गले में पहनाया जाता है। यह वयस्कों (विशेषकर महिलाओं) द्वारा भी पहना जाता है, लेकिन बच्चों में यह अधिक प्रचलित है।

कथन 2 (सत्य): 'कंठी' और **'गालवट'** दोनों ही गले के आभूषण हैं। 'कंठी' मोतियों या सोने के दानों की माला होती है, जबकि 'गालवट' (या गलपट्टा) गले से सटाकर पहना जाने वाला एक चौड़ा आभूषण है।

कथन 3 (असत्य): 'तिमणिया' (जिसे 'थम्मन्यो' भी कहते हैं) कमर का आभूषण नहीं है। यह महिलाओं द्वारा **गले** में पहना जाने वाला एक बहुत ही प्रसिद्ध और भारी आभूषण है, जो सोने की लड़ियों और लटकन से बना होता है।

कमर के प्रमुख आभूषण: कंदोरा, करधनी, तागड़ी और कणकती।

'तिमणिया' गले का आभूषण है, कमर का नहीं।

प्रश्न: 92

सही उत्तर: C

व्याख्या: कथन (A) (सत्य): ग्रामीण और विशेषकर जनजातीय क्षेत्रों (जैसे भील बाहुल्य क्षेत्रों) में आज भी **'पोतिया'** और **'फालू'** का व्यापक प्रयोग देखा जाता है। ये दैनिक जीवन और सांस्कृतिक पहचान के अभिन्न अंग हैं।

कारण (R) (असत्य): यह कारण पूरी तरह गलत है क्योंकि 'पोतिया' और 'फालू' आभूषण नहीं हैं, बल्कि ये **पुरुषों के वस्त्र** हैं:

पोतिया (Potia): भील पुरुषों द्वारा सिर पर बाँधा जाने वाला **सफेद अंगोछा या साफा** 'पोतिया' कहलाता है।

फालू (Falu): यह भील पुरुषों द्वारा शरीर पर लपेटा जाने वाला एक **बड़ा तौलिया या अंगोछा** है, जिसे कभी-कभी कमर पर भी लपेटा जाता है।

चूँकि ये वस्त्र हैं और पुरुषों द्वारा उपयोग किए जाते हैं, इसलिए इन्हें "महिलाओं के मांगलिक आभूषण" कहना तकनीकी रूप से असत्य है।

पोतिया और फालू पुरुषों के वस्त्र हैं, महिलाओं के आभूषण नहीं।

प्रश्न: 93

सही उत्तर: C

व्याख्या: कड़ा - पैर (संगत): कड़ा हाथ और पैर दोनों में पहना जाता है। पैरों में पहने जाने वाले कड़े अक्सर ठोस चांदी के होते हैं और भारी होते हैं।

लंगर - पैर (संगत): 'लंगर' पैरों में पहना जाने वाला एक विशिष्ट आभूषण है। यह कड़े के नीचे पहनी जाने वाली चांदी की मोटी लड़ियों वाली एक चेन जैसी होती है, जो मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचलित है।

नौकरी - हाथ (असंगत का सही तथ्य): 'नौकरी' (या नोकरी) पैर का नहीं, बल्कि **हाथ (कलाई)** का आभूषण है। यह चूड़ियों के बीच में या उनके साथ पहना जाने वाला मोतियों या सोने के दानों वाला आभूषण होता है। इसे अक्सर 'गजरा' के साथ भी पहना जाता है।

झाँझर - पैर (संगत): झाँझर पैरों का सुप्रसिद्ध आभूषण है जिसमें घुंघरू लगे होते हैं और चलने पर मधुर ध्वनि उत्पन्न होती है।

'नौकरी' हाथ (कलाई) का आभूषण है, पैर का नहीं।

प्रश्न: 94

सही उत्तर: A

व्याख्या: 'कसुमल' रंग कुसुंभ के फूलों से प्राप्त किया जाता है, केसर से नहीं।

प्रश्न: 95

सही उत्तर: B

व्याख्या: विकल्प B (सत्य): इस समूह के सभी आभूषण **कान** में पहने जाते हैं।

झुमका/बाली: कान के निचले हिस्से के सामान्य आभूषण।

टोंटी: कान के निचले छेद में पहना जाने वाला चक्राकार आभूषण।

लूंग: कान और नाक दोनों में पहना जाता है, लेकिन कान के संदर्भ में यह इस समूह का हिस्सा है। अन्य कान के आभूषणों में **सुरलिया, ओगनिया, पीपलपन्ना, अंगोट्या** और **झेलर** प्रमुख हैं।

wincompete

विकल्प A (असंगत): इसमें 'ओगनिया' और 'सुरलिया' तो कान के हैं, लेकिन **'मेमंद' सिर (मस्तक)** का आभूषण है।

विकल्प C (असंगत): यह पूरा समूह **सिर (मस्तक)** के आभूषणों का है (बोरला, टीका, रखड़ी, शीशफूल)।

विकल्प D (असंगत): यह पूरा समूह **हाथ (कलाई)** के आभूषणों का है (गोखरू, कंगन, पूँचिया, बंगड़ी)।

प्रश्न: 96

सही उत्तर: A

व्याख्या: कथन (A) (सत्य): 'बोरला' और **'रखड़ी'** दोनों ही राजस्थान में महिलाओं द्वारा **मस्तक (सिर)** पर पहने जाने वाले सबसे प्रमुख और पारंपरिक आभूषण हैं। ये दोनों सुहाग के प्रतीक माने जाते हैं और मांगलिक अवसरों पर अनिवार्य रूप से धारण किए जाते हैं।

कारण (R) (सत्य): इन दोनों की स्थिति में सूक्ष्म अंतर होता है जो इनकी पहचान सुनिश्चित करता है:

- **बोरला:** यह लट्टू या बेर के समान गोल होता है जो माथे (ललाट) के बिल्कुल मध्य में लटकता है। इसकी ऊपरी सतह पर अक्सर कीमती नगीने या मीनाकारी का काम होता है।
- **रखड़ी:** यह बोरला के ठीक पीछे की ओर स्थित होती है और बालों के पास (मांग के शुरू होने के स्थान पर) स्थिर रहती है। रखड़ी अक्सर बोरला से वजन में भारी और अधिक कलात्मक होती है।

व्याख्या का संबंध: चूँकि कारण (R) इन दोनों आभूषणों की मस्तक पर विशिष्ट भौगोलिक स्थिति (Placement) को स्पष्ट करता है, इसलिए यह कथन (A) की सही व्याख्या करता है कि ये मस्तक के ही अंग हैं।

प्रश्न: 97

सही उत्तर: D

व्याख्या: मिर्जाई (संगत): 'मिर्जाई' अंगरखी का ही एक प्रकार है। यह प्रायः आधी आस्तीन की या बिना आस्तीन की छोटी अंगरखी होती है, जो ग्रामीण क्षेत्रों में काफी प्रचलित है।

डगला (संगत): सर्दी के मौसम में ठंड से बचने के लिए रुई भरकर बनाई गई अंगरखी को 'डगला' कहा जाता है। इसे 'गदर' के समान ही माना जाता है।

काबा (संगत): 'काबा' भी अंगरखी का ही एक रूप है। यह अक्सर लंबी और बंद गले की शैली में होती है। अंगरखी के अन्य प्रसिद्ध नामों में **तनसुख, गदर, डौढी और कानो** भी शामिल हैं।

मदील (असंगत का सही तथ्य): 'मदील' अंगरखी का प्रकार नहीं है, बल्कि यह **दशहरे** के अवसर पर पहनी जाने वाली एक विशेष **पगड़ी (साफा)** का नाम है। यह जरीदार और कलात्मक होती है।

'मदील' एक पगड़ी (सिर का पहनावा) है, अंगरखी का प्रकार नहीं।

प्रश्न: 98

सही उत्तर: A

व्याख्या: कथन 1 (सत्य): 'बट्टा' और **'हारपान'** दोनों ही महिलाओं द्वारा **बाजू (Upper Arm)** पर पहने जाने वाले आभूषण हैं। बाजू पर पहने जाने वाले अन्य प्रमुख आभूषणों में **बाजूबंद, नवरत्न, आरत, चुड़ली** और **तड्डा** (अनंत) शामिल हैं।

कथन 2 (सत्य): 'गोंख' (जिसे गोखरू भी कहा जाता है) और **'चूड़ा'** दोनों ही **कलाई** पर पहने जाने वाले प्रमुख आभूषण हैं। गोखरू अक्सर सोने या चांदी के दानेदार उभारों वाला आभूषण होता है, जिसे चूड़ियों के बीच में पहना जाता है।

कथन 3 (असत्य): 'पूँचिया' (या पूँच) पैर के अंगूठे का आभूषण नहीं है। यह **कलाई** का आभूषण है, जिसे हाथ की चूड़ियों के साथ पहना जाता है। इसमें अक्सर छोटे-छोटे दानों की लड़ियाँ होती हैं।

पैर के अंगूठे के आभूषण: अनोटिया, गुठलो और फोलरी।

प्रश्न: 99

सही उत्तर: C

व्याख्या: निष्कर्ष 1 (सत्य): 'रेजा' विशेष रूप से **सहरिया जनजाति** की महिलाओं का एक प्रमुख वस्त्र है। यह एक प्रकार का विवाहित महिलाओं द्वारा पहना जाने वाला वस्त्र है, जो सहरिया संस्कृति की पहचान को दर्शाता है। सहरिया जनजाति मुख्य रूप से बारां जिले (शाहबाद और किशनगंज तहसील) में निवास करती है।

निष्कर्ष 2 (सत्य): 'कछावू' भील महिलाओं द्वारा कमर पर पहना जाने वाला **घुटनों तक लंबा घाघरा** है। यह प्रायः गहरे लाल या काले रंग के छपाई वाले मोटे सूती कपड़े से बना होता है। यह पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाली भील महिलाओं के लिए चलने-फिरने में सुविधाजनक होता है।

प्रश्न: 100

सही उत्तर: C

व्याख्या: दाँत का आभूषण 'चूँप' है। 'चोंप' नाक में पहना जाता है।

wincompete

wincompete